ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

अইল কিৰণ OIL KIRAN | 2016 | वर्ष 13 अंक 19 |

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की लेखनी से

ऑयल की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रुप में काम करना मेरे लिए गौरव की बात है। इस स्तंभ के माध्यम से मैं पहली बार आप सभी से रू-ब-रू हो रहा हूं। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि ऑयल भारत सरकार की नीतियों और हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा विकास के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध है। इस बार मैं आप सभी के साथ ऑयल की राजभाषा गतिविधियों पर संवाद करना चाहता हूँ।

भारत सरकार ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए संपूर्ण भारत को तीन वर्गों में विभाजित किया है 'क' वर्ग, 'ख' वर्ग और 'ग' वर्ग। ऑयल का क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान 'ग' वर्ग के अंतर्गत आता है। यहाँ अधिकतर अधिकारी और कर्मचारी वे हैं जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है फिर भी हमारे अधिकारी और कर्मचारी कठीन परिश्रम से हिंदी सीखते हैं और अपना कार्यालयीन काम-काज हिन्दी में करते भी हैं। इनकी प्रतिबद्धता का ही परिणाम है कि हम 'ऑयल किरण', 'ऑयल न्यूज' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन करने में समर्थ हैं। ऑयल का अधिकांश साहित्य द्विभाषी रूप में उपलब्ध है। भारत सरकार द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के पालन के अतिरिक्त हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक नूतन कार्य भी हमलोग लगातार कर रहे हैं। हमारा सारा ध्यान इस बात की ओर है कि हम अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच एक ऐसे सहयोगत्मक प्रतिस्पर्धी की भावना का विकास कर सके जिससे कि वे स्वतः स्फूर्त ही हिन्दी में अपना संपूर्ण काम करने की पहल करें। हमारे विभिन्न सहायक कार्यालय भी इसी विचारधारा से प्रेरित होकर कार्य कर रहे हैं और निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति तक करते रहेंगे। हमारे प्रयासों एवं पहलों को भारत सरकार की विभिन्न संस्थाओं द्वारा लगातार पुरस्कृत किया जाता रहा है। मैं आप से आग्रह करना चाहता हूं कि आप सभी हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास में अधिक से अधिक अपना वैयक्तिक योग देकर अपने आपको, समाज को, एवं राष्ट्र को गौरवान्वित करें।

प्राणजित डेका

(प्राणजित डेका)
महाप्रबंधक (सी.एस.आर) एवं
अध्यक्ष, रा. भा. का. स.

सम्पादकीय

इस स्तम्भ के माध्यम से आप लोगों के साथ संवाद करना वास्तव में मेरे लिए गौरव की बात है। हम सभी ने नये वर्ष का बहुत ही उत्साह पूर्वक स्वागत किया है साथ ही हम सभी ने अनेक नये संकल्प भी लिए होगें, आप सभी पाठको को ऑयल परिवार की तरफ से नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। साहित्य के क्षेत्र में बीता हुआ वर्ष रिक्तता का वर्ष रहा एक एक कर अनेक महान साहित्यकार हमसे दूर होते चले गये। इस रिक्त स्थान को भर पाना लगभग असम्भव है। पूरा ऑयल परिवार इन महान आत्माओं के लिए शोक सन्तप्त है।

राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए भारत सरकार ने अनेक नीतियों का निर्माण किया है। ऑयल परिवार भारत सरकार की इन नितियों के क्रियान्वयन के प्रति पूर्णतः वचनबद्ध है और अपने सभी दैनिक क्रिया-कलापों में इसे फलीभूत करने का हर सम्भव प्रयास करता है। सिर्फ इतना ही नहीं इनसे इतर भी विभिन्न नवीन पहलों के द्वारा भी हम हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए मार्ग प्रशस्त करते रहते हैं। आनेवाले समय में इस प्रकार के अनेक नवीन क्रिया-कलाप आप सभी को दृष्टिगोचर भी होंगे।

ऑयल किरण जैसी विशिष्ट पत्रिका जिसका अपना एक अलग ही इतिहास है, का सम्पादन करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। मेरे वरिष्ठ जनों ने इस कार्य को बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है। मुझे ऐसा लगता है कि इस प्रकार के गुरुतर दायित्व के लिए मैं बहुत ही कनिष्ठ हूँ, फिर भी मैं आप सभी की उम्मीदों को पूरा करने का पूरा प्रयास करुंगा। चूँकि यह मेरा प्रथम प्रयास है इसलिए गलतियाँ होना स्वाभाविक है आप उन्हें नजर अंदाज कर, उन्हें सुधारने और इस पत्रिका को और भी बेहतर बनाने में हमारा सहयोग करेंगे, ऐसा मैं विश्वास करता हूँ।

शैलेश त्रिपाठी

(डॉ. शैलेश त्रिपाठी)
सहायक हिन्दी अधिकारी

इस अंक में

'वैश्वीकरण' बनाम 'राष्ट्रवाद'	1
मोर	2
श्रीमद्भगवद्गीता (हिंदी भावानुवाद) प्रथम अध्याय	3
आज के संदर्भ में/मनुष्य ही तो है	4
ऑयल में हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन	5
निगमित कार्यालय - नोएडा	8
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी	10
कलकत्ता शाखा	13
राजस्थान परियोजना	14
ऑयल के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में हिन्दी माह 2015 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम	15
चमचे की दिल्ली-यात्रा	17
पिता	20
माँ	20
एक दुआ हमारे बुजुर्ग	21
घृणा	21
जनता की आवाज भ्रष्टाचार के खिलाफ	22
प्रकृति की वेदना	22
मेरी खोज	23
मैं बोझ नहीं हूँ	23
भारतीय संस्कृति की गरिमा तथा वर्तमान में इसकी उपयोगिता	24
संदेश	26
अगर ब्रह्मपुत्र नहीं होगा तो क्या होगा ?	27
ऋतुओं की ऋतु वसंत	27
वंचित वर्ग की आवाज उठाता शरत-साहित्य	28

सलाहकार
श्री प्राणजित डेका
महाप्रबंधक (सी.एस.आर)
श्री दिलीप कुमार दास
प्रमुख (जन सम्पर्क)

सम्पादक
शैलेश त्रिपाठी
सहायक हिन्दी अधिकारी

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद
श्री विजय कुमार गुप्ता

मुख पृष्ठ छायाचित्र

पत्रिका में प्रकाशित लेख/रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। 'ऑयल' राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क एवं आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित।

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड
डाकघर : दुलियाजान 786 602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

मुद्रक : सैकिया प्रिण्टर्स, दुलियाजान, दूरभाष : 9435038425

'वैश्वीकरण' बनाम 'राष्ट्रवाद'

अभिषेक कुमार दूबे
प्रशासन विभाग, दुलियाजान

वैश्वीकरण और राष्ट्रवाद सिर्फ दो शब्द नहीं बल्कि दो सत्ताओं का सूचक है। एक शब्द विश्व की आर्थिक सांस्कृतिक समरूपता का दर्शन है तो दूसरा अपनी मातृभूमि के लिए उत्सर्ग का मनोभाव है। वैश्वीकरण आर्थिक प्रयोजनों के लिए राष्ट्रीय सीमाओं का विलोचन चाहता है तो राष्ट्रवाद देश की संवृद्धि हेतु राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा चाहता है। एक दुनिया के 'सपाट' होने के प्रभाव की जांच करता है और तर्क देता है कि वैश्वीकृत व्यापार (Globalized trade) आउटसोर्सिंग (Outsourcing) आपूर्ति के श्रृंखलन (Supply - Chaining) और राजनीतिक बलों ने दुनिया को बेहतर और बदतर, दोनों रूपों में स्थायी रूप से बदल दिया है तो दूसरा राष्ट्र की संप्रभुता को बचाए रखने का दावा करता है।

वैश्वीकरण सीमाओं के पार विनिमय पर राज्य प्रतिबंधों का ह्रास या विलोपन और इसके परिणास्वरुप उत्पन्न हुआ। उत्पादन और विनिमय की तीव्र एकीकृत और जटिल विश्व स्तरीय तंत्र है जबकि 'राष्ट्रवाद' अपने राष्ट्र की समस्त विविधताओं को स्वीकार करते हुए देश के चप्पे-चप्पे से, उसके लोगों से लगाव - जुड़ाव महसूस करने वाली भावनात्मक एकता है। अतः यह प्रश्न उठता है कि क्या वैश्वीकरण और राष्ट्रवाद परस्पर विरोधी धारणाएं हैं या फिर एक दूसरे का पूरक है? क्या वैश्वीकरण और राष्ट्रवाद का सह अस्तित्व संभव है? इन प्रश्नों के अलावा इस संदर्भ में व्यवस्था हेतु राष्ट्र की अवधारण, स्वदेशी पूंजी व वस्तु का महत्व तथा संस्कृतिगत समरुपता या विविधता का सवाल भी प्रासंगिक है। अतः वैश्वीकरण तथा राष्ट्रवाद के अंतर्संबंध पर विशेष खोजबीन की आवश्यकता है।

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं के विश्व स्तर पर रुपांतरण की प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा सूचना, संमाधन को साझा करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का संयोजन है। वैश्वीकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के संदर्भ में किया जाता है, अर्थात् व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, पूंजी प्रवाह, प्रवास और प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में एकीकरण।

वैश्वीकरण से न सिर्फ व्यापारिक अड़चने खत्म हुई, बल्कि नवीन ज्ञान-विज्ञान, सूचना तकनीक और प्रौद्योगिकी आदि की आवाजाही भी बढ़ी और दुनिया भर के देश लाभान्वित होना शुरू हुए। वैश्वीकरण में यह मिथक है कि केवल शक्तिशाली राष्ट्र ही लाभान्वित होते हैं परन्तु वर्तमान युग में अगर अमेरिका का पेप्सी कोला भारत में बिकता है तो भारत का एसेम्बलड् कम्प्यूटर अमेरिक में भी बिकता है। इससे तो यही निष्कर्ष निकलता है कि वैश्वीकरण प्रतिस्पर्धात्मक अर्थव्यवस्था का भी अवसर देती है। कुल मिलाकर वैश्वीकरण आर्थिक प्रयोजनों के लिए राष्ट्रीय सीमाओं का विलोपन है।

वैश्वीकरण के केवल आर्थिक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करना अक्सर आसान होता है। इस शब्द के पीछे मजबूत सामाजिक अर्थ छिपा है। वैश्वीकरण का मतलब विभिन्न देशों के बीच सांस्कृति बातचीत भी हो सकता है। वैश्वीकरण के सामाजिक प्रभाव भी हो सकते हैं जैसे लैंगिक असामनता में परिवर्तन और इस मुद्दे को लेकर पूरी दुनिया में लिंग विभेद के प्रकारों पर जागरुकता फैलाने का प्रयास किया जा रहा है। उदाहरण के लिए अफ्रीकी देशों में लड़कियों और महिलाओं को लंबे समय से महिला खतना का शिकार बनाया जा रहा है। परन्तु पूरे विश्व के सामने आने से इस प्रथा में कुछ कमी आ रही है। इस प्रकार वैश्वीकरण बेहद सकारात्मक प्रतित होता है परन्तु यह सिक्के का एक ही पहलू है।

सिक्के का दूसरा पहलू भी है। वैश्वीकरण से संबंधित सभी प्रकार के गतिविधियों को नियमित करने की शक्ति अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों जैसे विश्व व्यापार संगठन, वर्ल्ड बैंक, आइ एम एफ आदि के पास होती है जो अप्रत्यक्ष रुप से बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा नियंत्रित होते हैं। इन संगठनों द्वारा नियम बनाये जाते हैं जिसे सभी सरकारों को अपने देश में लागू करने होते हैं। इसके साथ ही विधायी कनूनों और संविधान में संशोधन करने पड़ते हैं। इस प्रकार से वैश्वीकरण देश की संप्रभुता को गंभीर आघात पहुँचता है। इसके अतिरिक्त संस्कृतिक अभ्यासों और परम्पराओं का भी अतिक्रमण करता है।

इन सब कारणों से लगता है जैसे वैश्वीकरण राष्ट्र की अवधारण को कमजोर करने को आतुर है। भला किसी देश की संप्रभुता, निर्णय लेने की क्षमता, रहन-सहन, खान-पान तथा भाषा और संस्कृति में दखलंदाजी करने वाले वैश्वीकरण को अच्छा कैसे कहा जा सकता है? इस प्रकार वैश्वीकरण और राष्ट्रवाद का रिश्ता विरोधाभाषी प्रतीत होता है। क्या वाकई ऐसा ही है?

राष्ट्रवाद यूरोप की देन है। वेस्टफेलिया की संधि (1648) के जरिए नेशन-स्टेट की पहचान को स्पष्ट किया गया। राष्ट्रवाद शब्द अतीत में समान गौरव का होना, वर्तमान में एक समान इच्छा, संकल्प का होना, साथ मिलकर महान काम करने की इच्छा - एक जनसमूह होने की जरुरी शर्तें है। अतः राष्ट्र एक बड़ी और व्यापक एकता है। राष्ट्रों का अस्तित्व में होना जरुरी है और उनका स्वतंत्र होना भी। इस अर्थ में राष्ट्रवाद काफी सकारात्मक रुप में प्रदर्शित होता हैं। यही राष्ट्रवाद यूरोप में राष्ट्र राज्यो आधार बना। परन्तु राष्ट्रवाद भी हमेशा अच्छा नहीं होता बल्कि बहुत अर्थों में यह भी मानवता को मर्दित करता है।

दरअसल वैश्वीकरण और राष्ट्रवाद ये दोनों अवधारणायें अपने अतिवादी छोर पर जाकर एक-दूसरे के बजाय मानवता की दुश्मन ज्यादा बन जाती है। इसलिए भावुकतापूर्ण राष्ट्रवाद और निर्दयतापूर्ण वैश्वीकरण दोनों ही हानिकारक है, जब भी राष्ट्र की एकता-अखण्डता संप्रभुता और संस्कृति को आघात पहुँचता है। वैश्वीकरण के विरोध में राष्ट्रवाद स्वतः ही जाग उठता है। वैश्वीकरण की आड़ में पश्चिमीकरण या वर्ल्ड इज फ्लैट का विचार अथवा राष्ट्र की अखण्डता संप्रभुता और संस्कृति रक्षा की आड़ में चरम राष्ट्रवाद का उद्‌भव दोनों ही स्थितियाँ मानवता के लिए हानिकारक है। अतः इनके संतुलन पर जोर होना चाहिए ताकि अरब स्प्रिंग जैसी घटना दुबारा न हो।

मोर

अनुष्का फूकन
चतुर्थ (ब)
दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुलियाजान

मेघ आया मोर नाचता,
इतना सुंदर
वह क्या गाता ?
अपने सुंदर पंख फैलाकर
बारिस में नाचता रहता
सबके साथ वह
मित्रता रखता कोई न बोला
वह बुरा होगा।

इतना सुंदर मोर अपना
पंख फैलाकर नाचता रहता,
कि सबको लगे,
काश बारिस कभी न रूकती।

श्रीमद्भगवद्गीता (हिंदी भावानुवाद)
प्रथम अध्याय

अनिता निहालानी
दुलियाजान

कौरव-पांडव जब चले युद्ध को, धृतराष्ट्र बोले संजय से
कुरुक्षेत्र, उस धर्मक्षेत्र में, क्या किया फिर उन दोनों ने

संजय ने वार्ता बढ़ाई
दिव्य दृष्टि थी उसने पायी,
दुर्योधन, द्रोण तक पहुँचा
वीरों की संख्या गिनाई।

भीष्म हमारे रक्षक वीर, नेता भीम शत्रुओं के
ग्यारह अक्षौहिणी निज सेना, मात्र सात हैं विपक्ष में

शंख बजे, बजे नगाड़े
रणभेरी सुन सब थर्राए,
हुआ भयंकर नाद वहाँ
गोमुख व दमामे बजाए।

श्रीकृष्ण का रथ है अद्‌भुत, सुंदर मणियों से खंचित
मेघों की आवाज कर रहा, श्वेत अश्वों से सुसज्जित

सुंदर ग्रीवा, कर्ण लाल हैं
पैरों में हैं स्वर्ण नुपुर,
बजा रहे निज शंख अनोखा
कृष्ण विराजे रथ ऊपर।

'पांचजन्य' शंख कृष्ण का, 'देवदत्त' वीर अर्जुन का,
भीमसेन का 'पौण्ड्र' कहाए, 'अनंतविजय' धर्मराज का।

अर्जुन बोला तब केशव से,
मध्य में ले चलो मुझे,
कौन-कौन है जरा देख लूँ
प्राणों का भय नहीं जिन्हें।

कृष्ण हांकते रथ हौले से, ले कर आये ठीक मध्य में
भीष्म पितामह, गुरु द्रोण, प्रिय अति, मातुल दिखे

था अति कोमल उर अर्जुन का,
कांप उठा जो लख अपनों को,
बहा स्वेद, अंतर अकुलाया,
बोला उसने तब केशव को।

नहीं चाहिए राज्य मुझे, नहीं चाहता हूँ विजय भी,
परिजनों का करके वध मैं, नहीं मांगता मैं स्वर्ग भी

माना ये दोषी हैं हमारे
दुःख दारुण अनेक दिये हैं,
माना पाप किया इन्होंने,
कष्ट हमने बहुत सहे हैं।

लेकिन ये अपने हैं फिर भी, क्यों पाप कमाऊँ इन्हें मार
तज कर धनुष-बाण अर्जुन, जा बैठा पीछे दुःख से हार।

इच्छा शक्ति
आत्मसम्मान, आत्मज्ञान और आत्मसंयम ही व्यक्ति को शक्तिशाली बना सकते हैं।

आज के संदर्भ में

नारद प्रसाद उपाध्याय
भूविज्ञान एवं तैलाशय विभाग
दुलियाजान

सभ्य कहलानेवाला मानव
जल, थल और नभ को जीत लिया
पर -
मानव मनको जीत न सका
सामाजिक प्राणी कहलाने वाला मानव
आज, मानव से ही डरता है
अपने आप पर भी
विश्वास नहीं रहा, इसलिए वह
हाईड्रोजन बना, न्यूक्लियेर बम बना रहा है
वह जानता है, इससे विध्वंस है
फिर भी वह बना रहा है
क्यों कि -
मानव को इसी के बीच जीना है
इसी के बीच मरना है।
गोला-बारूदों के बीच
जिसका बचपन बीता हो
भला वह 'शान्ति' क्या जाने
जो हिंसा, अत्याचारों और हत्या के
माहौल में रहता हो
भला वह 'मानवता' क्या जाने
जहाँ लूट ही लूट हो
भला वहाँ सभ्यता कैसी।।
आज -
'शान्ति, मानवता और सभ्यता'
ये जो शब्द हैं
आज के संदर्भ में
शब्दकोष के शब्द प्रतित हो रहा है।।

मनुष्य ही तो है

(एक)

प्राणी जगत के इस संसार में
मनुष्य अपने को मानता है श्रेष्ठ
इसलिए -
पत्थर से बनी मूर्ति के सामने
घुटने टेक, माँगता है वरदान
वरदान माँगनेवाला -
मनुष्य ही तो है।।

(दो)

क - लिखते ही कविता नहीं होती
ख - कहते ही खराब नहीं होती
ग - गाते ही गीत नहीं होती
घ - पढ़ते ही घर नहीं होती
यह सब जानते हुए भी
अबुझ रहने वाला
मनुष्य ही तो है।।

(तीन)

ऐ चाँद।
चाँदनी रात में
गन्तव्य राह देखाने पर भी
'चाँद पर कालिमा है' कहते हैं
ये कहनेवाले भी -
मनुष्य ही तो है।।

(चार)

मनुष्य ही तो है
मिठी बातों से मोहित करता
ईर्ष्या से प्रतिद्वन्दी का
हत्या करता
हत्या करनेवाला
मनुष्य ही तो है।।

ऑयल में हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऑयल ने भारत सरकार के आदेशों के अनुपालन एवं हिन्दी के प्रचार के लिए तथा लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से सितम्बर मास में अपने क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के साथ ही अन्य सभी कार्यालयों में हिन्दी माह/पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन किया। क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में 01 सितम्बर 2015 को हिन्दी माह की शुरुआत की गई। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए श्री दिलीप कुमार दास, प्रमुख (जन संपर्क) ने उपस्थित सभी प्रतिभागियों से अपील की कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिन्दी में ही करें तभी हमें हिन्दी के विकास के लिए निर्धारित लक्ष्य प्राप्त होगा। कार्यक्रम की शुरुआत हिन्दी निबंध लेखन से की गई। पूरे माह के दौरान विभिन्न वर्गों में अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिन्दी माह 2015 की शुरुआत निबंध लेखन प्रतियोगिता के साथ की गई, निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागीगण। पूरे माह के दौरान हिन्दी की अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में उपस्थित निर्णायकगण एवं अपना-अपना पक्ष रखते हुए प्रतिभागी

हिन्दी माह के दौरान दुलियाजान एवं आस-पास के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी भाषा ज्ञान की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में भाग लेते विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थी।

हिन्दी डिक्टेशन (श्रुतिलेखन) की प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागीगण।

हिन्दी माह के दौरान हिन्दी प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया था जिसमें प्रतिभागियों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। श्री अभिजीत आनन्द प्रतियोगिता का आयोजन करते हुए एवं प्रतियोगिता में शामिल टीमें।

हिन्दी माह का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 29 सितम्बर को दुलियाजान क्लब में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री प्राणजित डेका, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री डी. के. दास, प्रमुख-जन संपर्क एवं मुख्य वक्ता डॉ. ए. एन. सहाय, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डिब्रू महाविद्यालय, डिब्रूगढ़ का फूलमगमच्छा से पारंपरिक स्वागत करते हुए की गई। कार्यक्रम को उद्घाटित करते हुए श्री प्राणजित डेका, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कहा कि - विश्व के सभी प्रमुख विकसित एवं विकासशील देश अपनी-अपनी भाषाओं में ही अपना सरकारी कामकाज करके उन्नत हुए हैं। हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। देश और समाज के व्यापक हित में राजभाषा हिंदी के प्रति जनता और सरकारी तंत्र दोनों को अधिक से अधिक संवेदनशील और सक्रिय बनाए जाने की आवश्यकता है।

हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने के संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा किया जाना सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी में टिप्पण तथा पत्राचार को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जाए। वास्तविकता में हिंदी में काम करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि भाषा को सरल एवं सहज रूप में लिखा जाए ताकि हिंदी जानने वाले तथा हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों द्वारा यह आसानी से समझी जा सके तथा अपनाई जा सके।

इस समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. ए. एन. सहाय, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डिब्रू महाविद्यालय, डिब्रूगढ़ उपस्थित थे। उन्होंने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस बीच हिन्दी की ग्रहणशीलता ज्यादा बढ़ी है। जो व्यक्ति पहले हिन्दी

एकदम नहीं समझता था, वह भी अब थोड़ी बहुत ही सही परन्तु समझता है। इसका प्रमुख कारण आपसी व्यापार, जरुरत आदि बहुत कुछ है। हिन्दी सिनेमा ने भी इसमें अपना बहुत योगदान दिया है। लोग फिल्में देखकर भी हिन्दी सीख रहे हैं। बाद में उन्होंने संचार माध्यमों, इंटरनेट, मोबाइल पर प्रयुक्त होने वाली हिन्दी पर भी अपना विचार रखा। डॉ. सहाय ने ऑयल द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किये जाने वाले कार्यों की सराहना की और साथ ही यह आशा भी व्यक्त की कि एक दिन ऐसा जरुर आयेगा जब हम हिन्दी में पूर्णरुपेण आत्मनिर्भर होंगें।

तत्पश्चात हिन्दी माह के दौरान आयोजित विभिन्न रचनात्मक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को डॉ. ए. एन. सहाय, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डिब्रू महाविद्यालय, डिब्रूगढ़, श्री प्राणजित डेका, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री डी. के दास, प्रमुख-जन संपर्क ने पुरस्कृत किया।

इसके साथ ही हिन्दी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के माननीय निर्णायकों को भी ऑयल परिवार ने उनके सहयोग एवं समर्पण के लिए स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

ऑयाल इंडिया लिमिटेड का क्षेत्र मुख्यालय प्रत्येक वर्ष अपने अन्तर-क्षेत्रीय कार्यालयों एवं क्षेत्र मुख्यालय में विभिन्न विभागों के मध्य राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले विभाग एवं कार्यालय को ऑयल की प्रतिष्ठित राजभाषा शील्ड प्रदान करता है, इस वर्ष इस शील्ड के विजेता हैं :

अंतर - क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड :

प्रथम - पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

द्वितीय - शाखा कार्यालय, कोलकाता

अंतर - विभागीय राजभाषा शील्ड :

प्रथम - अनुसंधान एवं विकास विभाग

द्वितीय - मोरान तेल क्षेत्र, मोरान

तृतीय - डिग्बोई तेल क्षेत्र, डिग्बोई

श्री प्राणजित डेका, महाप्रबंधक (सीएसआर) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए।

डॉ. ए. एन. सहाय, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डिब्रू महाविद्यालय, डिब्रूगढ़, अंतर-क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए।

श्री दिलीप कुमार दास, प्रमुख (जन संपर्क) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही वर्ष 2015 का हिन्दी माह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ।

निगमित कार्यालय - नोएडा

ऑयल इंडिया लिमिटेड के निगमित कार्यालय, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 01 सितंबर से 14 सितंबर 2015 तक किया गया। इस दौरान अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताएं तथा हिन्दी निबंध लेखन (दो श्रेणी - हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषी हेतु), हिन्दी पत्राचार, टिप्पण/आलेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी आशुभाषण और हिन्दी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ने काफी संख्या में भाग लिया। हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन दिनांक 14 सितंबर 2015 को किया गया। इस अवसर पर अपने स्वागत वक्तव्य में डॉ. आर.झा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि भारत की सभ्यता और भाषायी संस्कृति की जड़े गहरी हैं और ये विविध संस्कृतियों के सम्मिश्रण से गुजरकर सदियों से विकसित हुई है। भाषायी विविधता एवं बहुआयामी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिन्दी ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की धारणा को पुष्ट किया है। हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है। विश्व के सभी प्रमुख विकसित एवं विकासशील देश अपनी-अपनी भाषाओं में ही अपना सरकारी कामकाज करके उन्नत हुए हैं। हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए भारतीय संविधान में इसे संघ सरकार की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। देश और समाज के व्यापक हित में राजभाषा हिन्दी के प्रति जनता और सरकारी तंत्र दोनों को अधिक से अधिक संवेदनशील और सक्रिय बनाए जाने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, संपादक, समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी ने कहा कि भारत विविधताओं का देश है। यहां अनेक भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं। हिन्दी आम - आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। किसी भी भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। इसके लिए जरुरी है कि हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया जाए।

तकनीकी विषयों की पुस्तकों को भी सरल एवं सुगम भाषा में उपलब्ध कराना होगा तथा अंग्रेजी में प्रचलित इन पुस्तकों का हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराना होगा। इस दिशा में हमारे विश्वविद्यालय और संस्थान अहम् भूमिका निभा रही है।

भारत सरकार द्वारा हिन्दी को विश्व-भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास भी किया जा रहा है। वर्धा में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय तथा मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना ऐसे ही कुछ प्रयास हैं। विदेशों में बसे भारतीय मूल के प्रवासियों द्वारा भी हिन्दी को विश्व भाषा बनाने की दिशा में सहयोग दिया जा रहा है। हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की मान्य भाषा का दर्जा जल्दी से जल्दी प्राप्त हो। अंत में, मैं भी सभी पुरस्कार विजेताओं को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूं। मुझे उम्मीद है कि ये पुरस्कार हमें हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

अपने अध्यक्षीय भाषा में श्री एस.के.सिंह, प्रमुख (प्रशासन) ने कहा कि मैं अपनी ओर से उन सभी प्रतिभागियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि आपने पूरी सक्रियता से सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया और साथ ही उन सभी पुरस्कारकर्ताओं को भी हार्दिक बधाई देता हूं।

मित्रों, अब समय आ गया है कि सभी कार्यों को अपनी भारतीय भाषाओं और हिन्दी में किया जाए। यह तर्क अब निर्मूल हो चुका है कि अपनी भाषाओं में काम करके आप विकसित और विकासशील विश्व में पिछड़ जायेंगे। क्योंकि अनेक विकसित देश केवल अपनी भाषा में ही काम करके ही विश्व में अग्रणी बना है। ऐसा होता तो चीन, जापान, रूस, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि देश आज विश्व में विकास की दौर में पिछड़े होते हैं।

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि जनता और सरकारी तंत्रों के बीच पारदर्शिता लाने का जरिया भी हो। इसलिए हम सभी को अपना अधिकाधिक कार्य मूल रूप में अपनी भाषा में ही करना चाहिए। आज हमारे बीच एक प्रसिद्ध विद्वान श्री प्रभाकर श्रोत्रिय जी मौजूद होकर हमें अपने ज्ञान से सभी को आलोकित किया है। मैं अपनी ओर से उन्हें धन्यवाद देता हूं कि अपना बहुमूल्य समय देकर ऑयल इंडिया लिमिटेड को अनुगृहित किया।

अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान किया। धन्यवाद ज्ञापन और कार्यक्रम का संचालन डॉ. आर.झा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

भारत सरकार के गृह मंत्रालय अंतर्गत राजभाषा विभाग के दिशा-निदेशानुसार कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं लोगों को राजभाषा के प्रति आकृष्ट करने के उद्देश्य से 01 सितम्बर, 2015 से 30 सितम्बर, 2015 तक पाइपलाइन विभाग में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी माह समारोह, 2015 का भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ 01 सितम्बर, 2015 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब में उद्घाटन एवं राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन से हुआ जिसमें केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र के उप निदेशक (भाषा) श्री रामनिवास एवं डॉ छाया भट्टाचार्य, हिन्दी विभागाध्यक्षा, कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी क्रमशः बतौर अतिथि वक्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। समूह महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) प्रभारी श्री संजय कुमार राय तथा आमंत्रित अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी माह समारोह-2015 के विधिवत उद्घाटन की घोषणा की। "वैश्वीकरण और हिन्दी" शीर्षक पर आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में आमंत्रित अतिथि द्वय ने अपने सारगर्भित विचारों से सभागार में उपस्थित सभी को प्रेरित किया।

10 सितम्बर, 19 सितम्बर एवं 22 सितम्बर, 2015 को पाइपलाइन मुख्यालय में क्रमशः हिन्दी कविता पाठ, बच्चों के लिए श्रुतलेख, राजभाषा कार्यशाला एवं कार्मिकों के लिए श्रुतलेख तथा प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का सफल आयोजन हुआ।

15 सितम्बर, 2015 को पाइपलाइन के पंप स्टेशन नं.3 (जोरहाट) में हिन्दी माह समारोह-2015 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। स्टेशन प्रभारी प्रमुख श्री दिलीप कुमार सैकिया एवं पाइपलाइन के उप प्रबंधक (रा.भा) पाला श्री नारायण शर्मा ने भोगदोई क्लब के सभागार में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए हिन्दी भाषा की उपयोगिता और राजभाषा के रूप में दैनन्दिन कार्यालयी काम-काज में इसके प्रयोग को बढ़ाने की अपील की। कार्यक्रम का संचालन उप प्रबंधक (रा.भा) के तत्वावधान में श्री एम.के.बैश्य, वरिष्ठ अभियंता (दूरसंचार) ने किया। बच्चें, गृहिणीयां एवं अधिकारी व कर्मचारियों की उत्साह पूर्वक भागीदारी ने कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। ऑयल के सेवा निवृत्त अधिकारी श्री पार्थ प्रतीम बरुआ ने प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का सफल संचालन किया।

24 सितम्बर, 2015 को पंप स्टेशन नं.8 (सोनापुर) में हिन्दी माह समारोह-2015 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का भी सफल आयोजन सोनापुर क्लब के सभागार में हुआ। मुख्य अभियंता पाइपलाइन एवं स्टेशन प्रभारी श्री पी.जे.दत्त, मुख्य अतिथि क्षेत्र के खण्ड विकास अधिकारी (वी डी ओ) श्री एस सी विश्वास एवं पाइपलाइन के उप प्रबंधक (राजभाषा) पाला श्री नारायण शर्मा ने सभागार में उपस्थित लोगों को बारी-बारी से संबोधित किया। श्री शर्मा ने संपर्क भाषा, व्यवसायिक भाषा में हिन्दी के बढ़ते हुए महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी दूसरे पायदान पर है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के दिशा-निदेशों का उल्लेख करते हुए श्री शर्मा ने कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने का आग्रह किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में क्वीज मास्टर के रुप में विद्युत अभियंता (विद्युत एवं कैथोडिक) श्री गंगा राम डेका ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

30 सितम्बर, 2015 को पाइपलाइन मुख्यालय के लुईतपार क्लब सभागार में अपराह्न 1.30 बजे से हिन्दी माह समारोह-2015 का समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय मांलीगांव के उप निदेशक (हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण) श्री रूस्तम राय एवं हिन्दी सेंटिनल समाचार पत्र के संपादक श्री दिनकर कुमार क्रमशः मुख्य अतिथि एवं अतिथि वक्ता के तौर पर आमंत्रित थे। समूह महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री राहुल चौधुरी ने अपने संबोधन में पाइपलाइन मुख्यालय में राजभाषा हिन्दी के नियम और अधिनियम के अनुपालन की स्थिति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि हमें कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को और बढ़ावा देना चाहिए। मुख्य अतिथि श्री रुस्तम राय एवं अतिथि वक्ता श्री दिनकर कुमार को हिन्दी का प्रखर विद्वान बतलाते हुए उन्होंने सभागार में उपस्थित लोगों से कहा कि राय एवं कुमार जी के विचारों से हम सभी लाभान्वित होंगे। आमंत्रित मुख्य अतिथि श्री रुस्तम राय ने ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि में हिन्दी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं क्रमिक विकास पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि राष्ट्र की एकता अखण्डता में हिन्दी भाषा की महती भूमिका है। क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण की वकालत करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा को हमें बेहिचक-बेझिझक प्रयोग करना चाहिए। आज विश्व की अनेक भाषाएं लुप्त होने की कगार में है। अतः भाषा संरक्षण में हमें सचेत और सजग रहना चाहिए। अतिथि वक्ता श्री दिनकर कुमार ने 10 से 12 सितम्बर, 2015 तक भोपाल में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रबंध समिति के सदस्य के रुप में सम्मेलन के अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि हिन्दी न सिर्फ अपने देश में बल्कि विदेशों में भी अपना छाप छोड़ने में सफल हो रही है और आने वाले दिनों में विश्व भाषा के रूप में स्थापित होने में सक्षम भी होगी।

हिन्दी माह समारोह-2015 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कुल 68 पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति पत्र और नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

अंत में प्रमुख प्रशासन (पाला) श्री संजय कुमार राय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

पाइपलाइन मुख्यालय में हिन्दी माह समारोह-2015 का दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत उद्घाटन करते हुए कॉटन कालेज हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ छाया भट्टाचार्य एवं केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के उप निदेशक श्री रामनिवास

दिनांक 10.09.2015 को आयोजित हिन्दी कविता पाठ में प्रतिभागीगण कविता वाचन करते हुए तथा मंचासीन विचारक मंडली में श्री सिद्धार्थ कुमार पांडे, हिन्दी अध्यापक, केन्द्रीय विद्यालय, नारंगी, श्रीमती लक्ष्मी सुवेदी, प्रधानाध्यापिका, रघुनाथ चौधरी हाई स्कूल एवं उप प्रबंधक (राजभाषा) श्री नारायण शर्मा परिलक्षित हो रहे हैं

ऑयल पंप स्टेशन नं.3 जोरहाट में हिन्दी माह समारोह, 2015 के अंतर्गत कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के आयोजन की एक झाँकी

पाइपलाइन मुख्यालय में 22 सितम्बर, 2015 को हिन्दी माह समारोह-2015 के अंतर्गत आयोजित प्रश्नोत्तरी (क्वीज) प्रतियोगिता का दृश्य

दिनांक 19.09.2015 को आयोजित राजभाषा कार्यशाला कर्मचारियों एवं अधिकारियों के बीच श्रुतलेखन प्रतियोगिता

24.09.2015 को ऑयल पंप स्टेशन नं.8 सोनापुर में आयोजित हिन्दी कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का दृश्य

30 सितम्बर, 2015 को पाइपलाइन मुख्यालय में हिन्दी माह समारोह, 2015 के समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के दृश्य

कलकत्ता शाखा

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कलकत्ता शाखा कार्यालय में दिनांक 01.09.2015 से 15.09.2015 तक हिन्दी पखवारा का आयोजन किया गया, पखवारा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से नई प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। तत्क्षण आशुभाषण प्रतियोगिता, ऑयल इंडिया लिमिटेड सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, कम्प्यूटर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता, हिन्दी हस्ताक्षर एवं हिन्दी ईमेल प्रतियोगिता तथा क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। पखवारा का उद्घाटन एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के साथ हुआ। दिनांक 01.09.2015 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 14 कर्मचारियों ने भाग लिया कार्यशाला में विशेष रुप से डॉ. रमेश मोहन झा, हिन्दी शिक्षण योजना, कलकत्ता शाखा बतौर संकाय उपस्थित हुए। उनके अनुभव का लाभ सभी उपस्थित कार्मिकों ने उठाया। दिनांक 15.09.2015 को भव्य समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। खचाखच भरे कर्मचारी रिक्रेशन हॉल में कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कार्यालय के प्रमुख श्री डी के दत्ता ने सभी उपस्थित विद्वजनों का स्वागत किया तथा सभी कार्मिकों से अपील की कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में करें। उन्होंने यह भी कहा कि कलकत्ता शाखा के अधिकांश कार्मिक हिन्दीतर भाषी हैं परंतु उनके द्वारा अपने काम हिन्दी में करने का प्रयास सदैव किया जाता है, उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालय के अधिकांश अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालय में प्राप्त होने वाले पत्रों पर हिन्दी में हस्ताक्षर करते हैं तथा उन पर टिप्पणी भी हिन्दी में लिखने का यथासम्भव प्रयास करते हैं। उन्होंने कार्यालय के कार्मिकों को विशेष रूप से बधाई दी कि उन सभी के साझा प्रयास की बदौलत कलकत्ता शाखा कार्यालय को 29.08.2015 को लगतार दूसरे वर्ष पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी के करकमलों से हिन्दी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने का अवसर मिला। कार्यक्रम के दौरान श्री के एल दे, श्री अमोल भट्टाचार्य, श्री शुभेन्दु चट्टोपाध्याय, श्री गोपाल चक्रवर्ती, श्री विल्सन, श्री अलोक दंड तथा श्री विश्वनाथ चैटर्जी द्वारा कविताएं/गीत/विचार प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के अंत में सभी पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। श्री सोमनाथ गुप्ता, मुख्य प्रबन्धक (वित्त एवं लेखा) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

राजस्थान परियोजना

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गतिमान बनाने के उद्देश्य से 01 सितंबर से हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं 15 सितंबर 2015 को इसका समापन राजभाषा समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। राजभाषा समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में विराजमान थे जोधपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर डॉ नन्द लाल कल्ला। कार्यक्रम की शुरुआत मंच पर विराजमान गण्य-मान्य व्यक्तियों को पारंपरिक पुष्प-गुच्छ से स्वागत के साथ किया गया। श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने मंचासिन गण्य-मान्य व्यक्तियों के साथ-साथ उपस्थित सभी सज्जनों का स्वागत किया।

समारोह की अध्यक्षता राजस्थान परियोजना, जोधपुर के कार्यकारी निदेशक (प्रभारी) श्री नरेंद्र वशिष्ठ ने की। उन्होंने अपने भाषण में दैनन्दिन कार्य में राजभाषा हिन्दी को ज्यादा से ज्यादा प्रोयग में लाने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की। समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ नन्द लाल कल्ला ने कहा कि जिस भाषा को विश्व के 80 करोड़ लोग बोलते व समझते हैं, उससे सशक्त भाषा और कोई नहीं हो सकती। हिन्दी भाषा केवल एक भाषा नहीं है अपितु राष्ट्र का जीवन प्रवाह भी है। इसलिए हिन्दी का ज्ञान होना अत्यन्त जरुरी है। डॉ कल्ला ने राजभाषा के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी एवं ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए कार्यों की सराहना की। इसके पश्चात हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित अनुवाद, निबंध, श्रुतिलेख, खुला मंच प्रश्नोत्तरी आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह का संचालन कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन ने किया। श्री दिप्तोदीप सेन, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के आभार प्रकट के साथ समारोह का सफल समापन हुआ।

समीक्षा - अनुवर्ती कार्रवाई : कहना न होगा कि इन पंद्रह दिनों में हिन्दी का प्रयोग अधिकतम हुआ और यह पाया गया कि इस दौरान वित्त एवं लेखा विभाग द्वारा अधिकांश चेक हिन्दी में बनाये गये और इनका ब्यौरा हिन्दी में लिखा गया। डायरी डिस्पैच का संपूर्ण कार्य हिन्दी में किया गया। कार्मिकों द्वारा सारे आवेदन पत्र हिन्दी में / द्विभाषी दिये गये। इस प्रकार कार्यालय के दैनांदिनी कार्य का करीब 50% कार्य हिन्दी में हुआ। इस अभिवृद्धि को नोट किया गया और यह निर्णय लिया गया कि इन कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्य -मसलन वित्त एवं लेखा, प्रशासन, जनसंपर्क और पाइपलाइन विभागों आदि का अन्य कार्य भी द्विभाषी करने का प्रयास किया जाए और कार्यशालाओं में इसके लिए संबद्ध अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाए।

ऑयल के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में हिन्दी माह 2015 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का परिणाम

कार्मिकों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

प्रतियोगिता का नाम	प्रतिभागी का नाम	विभाग	पुरस्कार
1. हिन्दी श्रुतिलेखन प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी)	श्री विश्व भूषण सिंह	परिवहन	प्रथम
	सुश्री स्वाति कुमारी	कूप संलेखन	प्रथम
	श्री नितेश कुमार	भू-भौतिकी	द्वितीय
	श्री मोहित शर्मा	इ.आर.पी	तृतीय
(अन्य भाषा भाषी)	डॉ. नवनीत स्वरगिरी	चिकित्सा	प्रथम
	श्री मुक्ति आचार्य	उत्पादन (तेल)	द्वितीय
	श्री के. किरण कुमार	कूप संलेखन	तृतीय
2. हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी)	श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा	उत्पादन (तेल)	प्रथम
	श्री अमरेन्द्र नारायण	कूप संलेखन	द्वितीय
	श्री राजीव कुमार पाण्डेय	लेखा	द्वितीय
	श्री अभिषेक कुमार दुबे	प्रशासनिक	तृतीय
(अन्य भाषा भाषी)	श्री रितुराज बोरा	सामग्री	प्रथम
	श्री निपन शेनसोवा	सामग्री	द्वितीय
	श्री के. किरण कुमार	कूप संलेखन	तृतीय
3. हिन्दी पत्र लेखन/ टिप्पण/आलेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी)	श्री विश्व भूषण सिंह	परिवहन	प्रथम
	श्री भोला कुमार	कूप संलेखन	द्वितीय
	श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा	उत्पादन (तेल)	तृतीय
	श्री ओम प्रकाश जगन्नाथ	कूप संलेखन	सांत्वना
(अन्य भाषा भाषी)	श्री के. किरण कुमार	कूप संलेखन	प्रथम
	श्री अंजना मोरल	उत्पादन	द्वितीय
	श्री शरीफत अली	भूविज्ञान एवं तैलाशय	तृतीय
	श्री कौशिक दत्ता	सामग्री	सांत्वना
4. हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी)	श्री मोहित शर्मा	इआरपी	प्रथम
	श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा	उत्पादन (तेल)	द्वितीय
	श्री अभिषेक कुमार दुबे	प्रशासनिक	द्वितीय
	सुश्री स्वाति कुमारी	कूप संलेखन	तृतीय
	श्री नवनीत स्वरगिरी	चिकित्सा	प्रथम

(अन्य भाषा भाषी)	श्री विजय कुमार बनर्जी	लेखा	द्वितीय
	श्री मुक्ति आचार्य	उत्पादन (तेल)	तृतीय
5. हिन्दी प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता	श्री अभिजीत गोगोई	वेधन	प्रथम
	श्री सतम चौधरी	आई. टी.	प्रथम
	श्री भाविक मोदी	सामग्री	प्रथम
	श्री परिक्षीत पेगु	उत्पादन (गैस)	द्वितीय
	श्री अनवेश कुमार	उत्पादन (गैस)	द्वितीय
	श्री सोविक सरकार	सिविल अभियांत्रिक	द्वितीय
	श्री के. किरण कुमार	कूप संलेखन	तृतीय
	श्री ओम प्रकाश जगन्नाथ	कूप संलेखन	तृतीय
	श्री भोला कुमार	कूप संलेखन	तृतीय

छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

प्रतियोगिता व ग्रुप	नाम	स्कूल	कक्षा	पुरस्कार
हिन्दी भाषा ज्ञान प्रतियोगिता ग्रुपः I (कक्षा V से VI तक)	युवराज सोनार	केन्द्रीय विद्यालय	VI	प्रथम
ग्रुपः II (कक्षा VII से IX तक)	सौभिक नरोत्तम राय	दिल्ली पब्लिक स्कूल	VII	प्रथम
	प्रमोद क्षेत्री	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	VIII	द्वितीय
	जय श्री प्रसाद	केन्द्रीय विद्यालय	IX	तृतीय
	पायल गुप्ता	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	VII	सांत्वना
	शबनम खातुन	राष्ट्रभाषा विद्यालय	VIII	सांत्वना
ग्रुपः III (कक्षा X से XII तक)	पुष्पा क्षेत्री	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	X	प्रथम
	एस. जगदीश राव	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	XI	प्रथम
	अंशु अग्रवाल	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	XII	द्वितीय
	अवनीश कुमार सिंह	केन्द्रीय विद्यालय	X	द्वितीय
	नवनीता राजपूत	दिल्ली पब्लिक स्कूल	X	तृतीय
	गीता कुमारी साह	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	XII	तृतीय
	नेहा बंसल	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	XII	सांत्वना
	प्रियंका गुप्ता	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	XII	सांत्वना
	प्रिति सिंह	ऑ.इं.हा.से. स्कूल	XI	सांत्वना

चमचे की दिल्ली-यात्रा

हरिशंकर परसाई

चमचा यानी 'स्टूज'। हर बड़े आदमी का कम-से-कम एक होता है। जिनकी हैसियत अच्छी है, वे एक से ज्यादा चमचे रखते हैं। सारे फरिश्ते भगवान के चमचे हैं। शैतान ने भगवान का चमचा बनने से इनकार किया तो उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया - जैसे गैर-चमचे को चुनाव-टिकट नहीं दिया जाता।

एंथनी ईडन चर्चिल के चमचे थे। बॉसवेल डॉ. जॉनसन का चमचा था। राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन का चमचा जेंकिंस था, जो चुनाव के कुछ दिन पहले यौन-अपराध में पकड़ा गया था। गाँधीजी तक के चमचे थे।

सबसे ज्यादा चमचे राजनीति के क्षेत्र के नेताओं के होते हैं। इतिहास साक्षी है कि दुनिया में जितनी उथल-पुथल हुई है, वह महापुरुषों के कारण नहीं बल्कि उनके चमचों के कारण हुई है। जब भी चमचे ने अपनी अक़्ल से कुछ किया है, तभी उपद्रव हुए हैं। इसलिए हर बड़ा आदमी विश्वहित में इस बात की सावधानी बरतता है कि उसका चमचा कभी भी अपनी अक़्ल का उपयोग न करे।

मेरा अंदाज़ है, इस समय देश में राजनीति के क्षेत्र में लगभग पाँच हज़ार चमचे काम कर रहे हैं। ये प्रधान चमचे हैं। फिर इनके स्थानीय स्तर के उपचमचे और अतिरिक्त चमचे होते हैं। ये सब हीनता, मुफ्तखोरी, लाभ और कुछ वफ़ादारी की डोर से अपने नेता से बंधे रहते हैं। इनमे गजब की अनुशासन-भावना होती है। अगर किसी उपचमचे को जनपद की सीट का टिकट चाहिए तो वह सीधा नेता के पास नहीं जाएगा। वह प्रधान चमचे से कहेगा और प्रधान चमचा नेता से बात करके उसका काम कराएगा। इस तरह नेता का दुनिया से संपर्क सिर्फ़ चमचे के मार्फ़त होता है और कुछ दिनों में उसको यह विश्वास हो जाता है कि इस विशाल दुनिया में मेरे चमचों के सिवा कोई और नहीं रहता। अपनी दुनिया को इस तरह छोटा करके जीने का सुख नेता कुछ साल भोगता है और फिर उसी नाव पर इस सुख का बोझ इतना हो जाता है कि नाव नेता को लेकर डूब जाती है। चमचे तैरकर किनारे लग जाते हैं और दूसरे नेता के चमचे हो जाते हैं। उसके डूबने तक वे उस नेता के चमचे बने रहते हैं। नेता मरता रहता है, चमचे अमर होते हैं। चमचा ज्यों-ज्यों परिपक्व होता जाता है, त्यों-त्यों नेता बनता जाता है। उसके अपने उपचमचे तरक्की पाकर चमचे हो जाते हैं और उसकी नाव डुबाकर खुद किनारे लग जाते हैं। कुछ चमचे जीवन-भर सिर्फ़ चमचा बने रहने का व्रत पालते हैं और पचीसों नेताओं को डुबाने का पुण्य प्राप्त करते हैं।

चमचा बनना आसान नहीं है। एक अच्छे चमचे का निर्माण कई सालों में होता है। भारतीय प्रजातंत्र का यह सौभाग्य है कि यहाँ स्वतंत्रता के बाद बहुत जल्दी काफ़ी संख्या में चमचे बन गए। इसका कारण यह है कि चमचों का निर्माण स्वतंत्रता-संग्राम के ज़माने में ही शुरु हो गया था। उस दौर में नेता लोग भावी चमचों को जेल भेजने की कोशिश करते थे। आंदोलन में जब ऐसा लगता कि इस बार सरकार सख्ती कम करेगी, जेल कम दिनों की होगी और वहाँ आराम भी रहेगा, तब हर नेता अपने ज्यादा-से-ज्यादा चमचों को जेल भेजने की कोशिश करता था। तब जेल जाने के लिए वैसी ही होड़ होती थी जैसी अब चुनाव-टिकट के लिए होती है। जब भारत स्वतंत्र हुआ और प्रजातंत्र आया तो हर नेता को अपने शिक्षित और अर्द्धनिर्मित चमचे मिल गए। इससे भारतीय प्रजातंत्र में एकदम स्थायित्व आ गया। एशिया और अफ्रीका के नए स्वतंत्र जिन देशों में आज़ादी की लड़ाई के दौर में चमचों का निर्माण इस तरह नहीं हुआ था, वहाँ प्रजातंत्र नहीं टिक सका। चाहे साम्राज्यवाद हो, चाहे प्रजातंत्र

- दोनों चमचों की बुनियाद पर खड़े रहते हैं।

चमचा बड़ी तरक़ीब से यह बात फैलाता है कि नेता का वह विश्वास-पात्र है, उनका आत्मीय है और वे उसकी बात कभी नहीं टालते। वह उनके साथ जगह-जगह दिखता है। उनका बस्ता रखे रहता है। ठीक पीछे मुसकराता खड़ा रहता है। नेता के गले में माला पड़ती है तो चमचा गदगद होता है। नेता आगे बढ़ता है तो चमचा रास्ता बनाता जाता है। वह सफ़र में उनके साथ होता है, मंच पर पीछे बैठा मुग्ध होता रहता है, ड्राइंगरुम में बैठा दिखता है और रसोईघर में भी घुस जाता है। लोग उसे देखते हैं और लाभ उठाने वाले समझ जाते हैं कि इसी की मार्फ़त काम हो सकता है। चमचे की क़ीमत समाज में बढ़ जाती है। उसे लोग चाय पिलाते हैं, पान खिलाते हैं और वह 'भैया साब' का गुणगान करता है। यह कहना नहीं भूलता कि भैया साब मुझसे पूछे बिना कुछ नहीं करते।

किसी क्षेत्र के लिए वह ऐतिहासिक क्षण होता है, जब चमचा कहता है - राजधानी जाना है, भैया साब ने बुलाया है।

सारे इलाक़े में हलचल मच जाती है। दो-चार दूकानों पर बैठकर और दो-चार जगह चाय पीकर चमचा प्रचार कर देगा कि भैया साब का काम उनके बिना नहीं चल सकता। इतना करके वह एक-दो दिन घर बैठ जाता है। उसके पास काम कराने वाले आने लगते हैं -

'कब जा रहे हो दिल्ली?'

'बस आज या कल। चला तो कल ही जाता, पर आज एक मीटिंग थी।'

'तो भैया, इस बार किसी तरह हमारा काम हो ही जाए। देखो, बहुत दिन ही गए।'

'हाँ-हाँ, इस बार हो ही जाएगा। वह तो पिछली बार ही हो जाता पर सेक्रेटरी बाहर था। इस बार तो भैया साब मिनिस्टर का हाथ पकड़कर करवा देंगे।'

उपचमचे अपने काम में जुट जाते हैं और लोगों को चमचे के पास लाते जाते हैं। चमचा सबको विश्वास दिलाता है कि अगर यह सही है कि पृथ्वी घूम रही है तो वह निश्चित ही अपने भैया साब के आसपास घूम रही है।

फिर वह सहज ही कह देता है - 'राजधानी में रहने-खाने का तो सुभीता है। भैया साब के घर हो जाता है। पर साले दफ़्तर बड़ी दूर-दूर हैं। टैक्सी में बहुत पैसा लग जाता है।'

इस इशारे को काम कराने वाले समझ जाते हैं और उसे कुछ रुपए टैक्सी के लिए दे देते हैं।

चमचा बहुत-से काम ले लेता है - किसी का परमिट लाना है, किसी को नगरपालिका में भेजना है, किसी पर से मुकदमा उठवाना है, किसी के हर्जाने का मामला तय करना है, किसी का चुनाव-टिकट पक्का करना है। भैया साब के लिए वह विरोधी गुट की कुछ कमज़ोरियाँ, कुछ षड्यंत्र और फूट की कथाएँ रख लेता है। इस तरह लैस होकर चमचा रेलगाड़ी में बैठ जाता है।

भैया साब के घर में चमचा बड़े हल्ले के साथ पाँव पटकते हुए घुसता है। इसका कारण यह है कि वह जानता है, इस घर में मेरे आने का हक़ कोई नहीं मानता। आम चमचों से नेता के घर के लोग और नौकर नफ़रत करते हैं। वह चमचा हज़ारों में एक होता है जिसे नेता भी चाहे, उनका परिवार भी और नौकर भी। चमचा इस बात को जानता है, इसलिए अपने मन को मज़बूत करने के लिए और सबको यह बताने के लिए कि यहाँ मैं घर का आदमी समझा जाता हूँ, पाँव पटककर घर में घुसता है। नौकर मुँह फेरकर हँसता है और फिर नाराज़ी से उसे देखता है। नेता की पत्नी कहती है-लो, वह फिर आ गया।

चमचा ज़बरदस्ती अपने को घर में जमा लेता है। नेता ने उसे बुलाया नहीं है, पर वह आ गया है, तो उन्हें एतराज़ भी नहीं।

अब चमचा अपना काम शुरू कर देता है। वह बातें करता जाता है। कभी नेता उसकी तरफ़ देख लेते हैं। कभी कोई सवाल कर देते हैं। मगर वे लगभग मौन सुनते जाते हैं। वे बैठक में हैं तो चमचा वहाँ बात कर रहा है। वे बरामदे में आ गए तो चमचा बरामदे में आकर बात करने लगा। वे बाथरूम में

गए तो चमचा बाहर खड़ा-खड़ा बोल रहा है। पाख़ने से तो वे संस्कारों के कारण नहीं बोलते पर नहाते हुए उसकी बात पर कभी 'हूँ' कह देते हैं। नेता सिर पर कंधी कर रहे हैं और चमचा पीछे खड़ा-खड़ा बोल रहा है।

-गुप्ता गुट के लोग सिंधियों पर डोर डाल रहे थे। मैंने कहा, देखो रे, सिंधियों, अभी तुम्हारे बहुत-से 'क्लेम' बक़ाया हैं। ज़रा सोच-समझकर। बस उस दिन से गुप्ता गुट की दाल नहीं गली।

- भैया साब, इस बार हिरमानी को म्युनिसिपैलिटी में भेज दीजिए न। पक्का अपना आदमी है।

- जैन लोग उस दिन मिले थे। मैंने कहा, भैया साब ने कह दिया है तो पत्थर की लकीर समझो।

- साबूराम के लाइसेंस का मामला अभी लटक रहा है, भैया साब। वह पीछे पड़ रहा है।

- इस बार पी.सी.सी. में बड़ा तूफ़ान उठेगा। रामसिंह की 'इन्क्वारी' का मामला है न। पर सुना है, ठाकुरों में फूट पड़ गई है। आधे अपना साथ देंगे।

- कलेक्टर आजकल गुप्ता गुट की बड़ी चिरौरी करता है। इसका तबादला होना चाहिए। वे लोग 'लेच्छी' को लेकर आपको बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं।

- आजकल मिसराजी की बैठक डॉक्टर साहब के यहाँ बढ़ गई है। मैंने डॉक्टर साहब को टटोलने की कोशिश की थी। मुझे तो शक़ है भैया साब, कहीं उधर न चला जाए। उस इलाक़े में आपका एक बार आना बहुत ज़रूरी है।

चमचा इस तरह बोलता ही जाएगा। नेता सुनते रहेंगे और काम करते रहेंगे।

नौकर ने चाय लाकर रखी तो चमचे को फ़ौरन एक बात सूझ गई। उसने नौकर को पुकारा-क्यों रे देवी, यह क्या चाय ले आया! तुझे मालूम नहीं है कि भैया साब 'स्ट्रांग' चाय पीते हैं। ले जा इसे । दूसरी ला।

भैया साब स्ट्रांग चाय नहीं पीते। वे एक घूँट पी भी लेते हैं। कहते हैं - ठीक है, रहने दो।

चमचा कहता है - नहीं, रहने दीजिए। इसे ले जा, देवीसिंह।

नौकर आकर खड़ा है। दुविधा में है कि कप उठाऊँ या नहीं।

इतने में नेता के 'नहीं-नहीं' कहने पर भी चमचा कप उठाकर नौकर को दे देता है - तेरे अकल नहीं है। अच्छी चाय बनाकर ला।

चमचे की 'ओवरएक्टिंग' से सब स्तब्ध हैं - नेता की पत्नी, बच्चे और नौकर। भैया साब सिर नीचा करके बरदाश्त कर लेते हैं। चमचा पालना बड़े धैर्य का काम है।

तीन-चार दिन वहाँ रहकर चमचा नेता से रेल-किराया लेकर गाड़ी में बैठ जाता है। उसकी जेब में सभी के लिए आशा और आश्वासन भरे होते हैं।

साभार : निठल्ले की डायरी

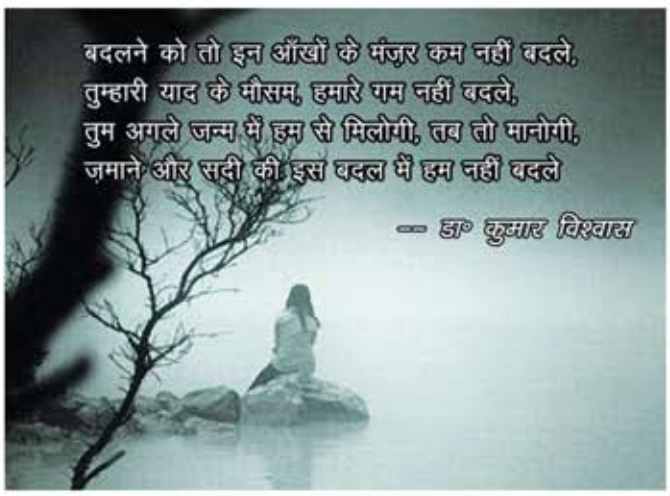

पिता

रदाली हाजरिका
आठवीं 'ब', दिल्ली पब्लिक स्कूल
दुलियाजान

माँ घर का गौरव तो पिता घर का अस्तित्व होते हैं।
माँ के पास अश्रुधारा तो पिता के पास संयम होता है।
दोनों समय का भोजन माँ बनाती है तो
जीवन भर भोजन व्यवस्था करने वाले
पिता को हम सहज ही भूल जाते हैं।
कभी लोगों को ठोकर लगे या चोट तो
"ओ माँ" ही मुँह से निकलता है।
लेकिन रास्ता पार करते कोई ट्रक
पास आकर ब्रेक लगाए तो
"बाप रे" यही मुँह से निकलता है
क्योंकि छोटे छोटे संकटों के लिए माँ है
पर बड़े संकट आने पर पिता ही याद आते हैं!
पिता एक वट वृक्ष है जिसकी शीतल छाँव में
संपूर्ण परिवार सुख से रहता है।

उँगली पकड़कर जो हमें चलना सिखाता है
जीवन संग्राम में जो हमें सही राह दिखाता है
वहीं है हमारे प्यारे पापा
जिसके चेहरे में इतने समस्याओं के बावजूद
हमेशा एक प्यारी सी मुस्कान रहती है
जो सिर्फ हमारी एक छोटी मुस्कान के लिए
सारे गमों को भूला सकता है
जो हमसे धन, अनाज, संपत्ति कुछ नहीं चाहता
चाहता है तो सिर्फ हमारी खुशी
हम खुश रहे और जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सके
यहीं है हमारे पापा।

माँ

विनीता सिंह,
कक्षा - VII 'अ', दिल्ली पब्लिक स्कूल
दुलियाजान

जब आँख खुली तो अम्मा की गोदी का एक सहारा था।
हाथों से बालों को नोचा, पैरों से खूब प्रहार किया।
फिर भी उस माँ ने पुचकारा, और जी भरकर प्यार किया।
मेरी राहों के काँटों को चुनकर, वह खुद गुलाब बन जाती थी।
हम भूल गए उसकी ममता, मेरे जीवन की थाती थी।
हम भूल गए अपना जीवन वह अमृत वाली छाती थी।
हम भूल गए वह खुद भूखी, रहकर हमें सदा खिलाती थी।
हमको सूखा बिस्तर देकर, खुद गीले में सो जाती थी।
हम भूल गए उसने ही होठों को भाषा सिखलाई थी।
मेरी नीदों के लिए रातभर, उसने लोरी गाई थी।
हम भूल गए हर गलती पर, उसने झिड़का समझाया था।
बुरी नजर न लगे, सदा काला टीका लगाया था।
बड़े हुए तो बंधन वाले, सारे रिश्ते तोड़ आए।
बदले में कुत्ते पाल लिए, माँ को वृद्धाश्रम छोड़ आए।
घर में पूरा जीवन देकर, बेचारी माँ क्या पाती है।
रूखा-सूखा खा लेती है, पानी पीकर सो जाती है।
हर घर में माँ की पूजा हो, ऐसा संकल्प उठाती हूँ।
मैं दुनिया की हर माँ को अपना शीश झुकाती हूँ।

आलस्य

जो आज और अभी नहीं हो सकता वह कभी नहीं हो सकता।

एक दुआ हमारे बुजुर्ग...

नेहा कुमारी शाह
ग्यारह 'ए', ऑयल हायर सेकेंडरी स्कूल
दुलियाजान

एक ख्याल की तरह होते हैं,
जब पल-पल में बिखर जाते हैं
अपने दिलो की दुआओं से संभाला करते है हमें,
हमारे बुजुर्ग।
जब अंतर्मन से होते हम खाली,
फिर कोई हमारी राह नहीं,
हमारा जुनून, हमारी ख्वाहिश, ताकत बन जाते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
हम कौन हैं, क्या हैं, जब कोई
खुद की खबर नहीं होती हमें,
मरते हुए के लिए उस पल अशीर्वाद बन जाते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
तूफान में जब कभी एक
दीये की तरह टिमटिमाते जलते हैं,
हर कदम पे हमें दे हिम्मत, हमारा हौसला बढ़ाते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
जब ये एहतराम होता है कि
कोई हमारा साथी, रहनुमा भी नहीं,
खुशियों की जिंदगी में तब, फलसफे बन जाते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
चढ़ता दरिया बनकर और उफान के
गर पाना चाहे मंजिल कोई
देकर मशविरा तहजीब का, एक तजुर्बा बन जाते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
जब कभी फितरत में रंगीन मिजाजी,
पुरजोर हो जाती है हमारे,
फैला के आंचल हमारे मुकद्दर पर, एक साया बन जाते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
कैसे ताउम्र बच्चों की परवरिश
और उनकी बेहतरी के जज्बे में,
मौत के हर कदम पर अपनी, सांसों को जीतते जाते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
जिनकी दुवाओं से ही हमें हासिल होते हैं
ये शोहरत और ये मुकाम,
कांपता हाथ सर पर रखते ही, राह के पत्थर हटा देते हैं,
हमारे बुजुर्ग।
बनके सरपरस्त जब हमें,
लपट लेते हैं अपने बाहुपाश में प्यार से,
घर-आंगन में चांदनी लेकर, चांद बनकर उतर आते हैं,
हमारे बुजुर्ग।

घृणा

रदाली हाजरिका
आठवीं 'ब'
दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुलियाजान

घृणा न करो किसी से
ईर्ष्या का जहर न पालो
गलती हो जाए किसी से
तो क्षमा उसे कर डालो।
बुरे विचार रखने से
मन अपना मैला होता है,
बुरी भावनाएँ जन्म लेती है।
चरित्र अपना दूषित होता है।
बुरा किसी का सोचोगे
तो अपना भी भला न होगा,
कष्ट किसी को दोगे
तो क्लेश तुम्हें भी होगा।

प्रकृति की वेदना

संध्या यादव
बारह 'ए'
ऑयल हायर सेकेंडरी स्कूल
दुलियाजान

क्या आपने नहीं सुना प्रकृति का सिसकना।
क्या हमने भी नहीं सुना किसी के हृदय की वेदना!
लेकिन आज मेरी कलम कुछ लिखना चाहती है,
किसी के मन की वेदना कहना चाहती है।
धरा हमसे कह रही, बेरंग करो ना उसका आँचल
भाता है सिर्फ उसको हरे मोतियों का आँचल।
हरे आँचल की छाव में जीवन मिला है सबको
जिनको दिया इसने जीवन उसीने बर्बाद करना चाहा उसको।
सरीता, समीर, धरा, अम्बर का कर्म पराहित में है,
इनसे निर्मित श्रृष्टि में संसार समाहित है।
जन-जीवन के निर्माण में प्रमुख स्थान इसका
परोपकार से इसका जीवन फला-फूला है सबका।
कुदरत कहती है हमसे, हमें जो मिटाओगे,
सोच लो ये मानव तुम खुद ही मिट जाओगे।

जनता की आवाज भ्रष्टाचार के खिलाफ

नेहा बंसल
बारह 'ए'
ऑयल हायर सेकेंडरी स्कूल
दुलियाजान

ये दौर नहीं है रुकने का, ये दौर नहीं है झुकने का
हो चुका है शंखनाद, अब तो बस रण ही रण है
भ्रष्टाचार की लड़ाई का अब आ गया निर्णायक क्षण है
जनता का, जनता को, जनता के लिए ये आमंत्रण हैं

मुक दर्शक नहीं हो तुम
तुम्हारे मुक होने को
इन लोगो ने गूंगा बहरा मान लिया
इन्हें बता दो, जब भी प्रलय आया है
जब भी दुनिया बदली है
पानी ने अहम किरदार निभाया है

दुनिया गर इसे हिमाकत कहे तो,
हाँ हमें ये हिमाकत करनी होगी।
और हमें खुद होकर खुद की वकालत करनी होगी
माना सच की लड़ाई में,
कुछ अपनो से ही खिलाफत करनी होगी
अब जनता को ही लोकतंत्र की हिफाजत करनी होगी....

उद्यम

उद्यम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं,
केवल मनोरथ करने से नहीं।
जैसे सोते हुए सिंह के मुख में मृग
अपनेआप प्रवेश नहीं करते।

मेरी खोज

निश्चित फरवाहा
नौवीं 'ए'
केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

कहा था सबने, सुना था सबसे, होता है कोई एक भगवान
फिरा मैं जग में, मिला मैं सबसे, मिला न मुझको वो भगवान।
भागता रहा हर चीज के पीछे, मिली न मुझे मेरी पहचान।
धन से तन को खूब सजाया, मन भी मैंने बहुत बहलाया।
पर फिर भी कुछ कमी थी हर पल, क्या थी कमी मैं समझ न पाया।
जहाँ कहीं जिसने भी बताया, वहाँ-वहाँ मैं होकर आया।
पर क्या है सच? कहाँ है सच? ऐसा कुछ भी नजर न आया।
फिर थक कर मैं घर को आया, पर घर में भी कुछ न पाया।
जाऊं कहाँ अब किसके पास? कौन सच बतला पायेगा?
क्या होता भी है कोई भगवान्? कोई उससे मुझे मिलवाएगा?
लाखों की उस भीड़ में से, एक चेहरा फिर निकल के आया।
हाथ को मेरे पकड़ के वो, मुझे तुम्हारे द्वार ले आया।
प्रश्नों से भरे इस मन को, तुम्ही ने सच्चा मार्ग दिखाया।
बस उस पल के मैं वारे जाऊं, जब सच को अपने अन्दर पाया।
मिली शांति मन को मेरे, समझ में मेरे सब कुछ आया।
मुझमें ही है सारी कायनात, मुझमें ही है भगवान समाया।
मेरे सद्गुरु तुम्हें प्रणाम, मिल गए मुझे मेरे भगवान्।

मैं बोझ नहीं हूँ

वंशिका बोरा
ग्यारह 'सी'
केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा
चलते चलते थक गई कंधे पर बिठा लो न पापा
अँधेरे से डर लगता है सीने से लगा लो न पापा
मम्मा तो सो गई
आप ही थपकी देकर सुलादो न पापा
स्कूल तो पूरी हो गई
अब कॉलेज जाने दो न पापा
पाल पोस कर बड़ा किया
अब तो जुदा करो न पापा
अब डोली में बिठा ही दिया तो
आँसू तो मत बहाओ पापा
आप की मुस्कराहट अच्छी हैं
एक बार मुस्कराओ न पापा
आप ने मेरी हर बात मानी
एक बात और मान जाओ न पापा
इस धरती पर बोझ नहीं मैं
दुनियाँ को समझाओ न पापा।

चरित्र

मनुष्य की सब से बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं वरन चरित्र है और यही उस का सब से बड़ा रक्षक हैं।

भारतीय संस्कृति की गरिमा तथा वर्तमान में इसकी उपयोगिता

एस. जगदीश राव
कक्षा - 11वीं विज्ञान शाखा
ऑयल इंडिया हायर सेकेंडरी स्कूल, दुलियाजान

भारतीय संस्कृति नरमानव को देवमानव गढ़ने वाली प्रक्रिया का प्रशिक्षण तत्वज्ञान के माध्यम देती चली आयी है। उसी देश की संस्कृति के लिए जो सोने की चिड़िया कहलाता था, समूचा विश्व जिसकी अथाह संपदा की ओर आश्चर्य भरी आँखों से ताकता था। आज उसी देश को सम्पदाविहीन होकर औरों की ओर याचक को दयनीयता से टकटकी लगाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। जानते हो क्यों? जगतगुरु कहलाने वाला समस्त कलाओं और विद्याओं के एक राष्ट्र चक्रवर्ती का वैभव आज कहाँ विलीन हो गया? कहाँ लुप्त हो गया उसकी बौद्धिक क्षमता और प्रतिभा जो उसे तकनीकी विशेषता के सभी क्षेत्रों में अन्यों के सामने घुटने टेकने पड़ते हैं। ऋषितत्व को आत्मसात करने वाले देवत्व की आराधना करने वाले आज बिलाशिता और भोगवाद के चंगुल में कैसे जा फँसे? भारतीय संस्कृति की धवल धारा में जहाँ जीवन के कमल खिलते थे, जिनकी महक से धरा स्वर्ग बनती थी। इसका एक मात्र कारण आज हम ऋषियों की अमर वाणी को भूल चुके हैं। भूलते जा रहे हैं। मानवीय जीवन के गिरते हुए मूल्यों को पुनः सँवारना पड़ेगा। आज युग तो बुद्धि का है भाव की तरफ गति कैसे होगी? भाव संस्थान को विकसित होने का कोई उपाय भी नहीं दिखाई पड़ता। भाव विज्ञान को अग्रति करने हेतु भारतीय सँस्कृति की गोद में जाना पड़ेगा। बौद्धिकता का संताप अपने चरम शिखर को छू रहा है। अब स्वाभाविक है कि जीवन का पेंडुलम भाव संस्थान की ओर मुड़ चले।

यह सही है कि मनुष्य ने साधनों की दृष्टि से प्रगति की है। आज जो कुछ भी हमारे पास है, संभवतः सुख-सुविधा। प्रसन्नता प्रदान करने वाले सब साधन हमारे पूर्वजों के पास नहीं थे। विज्ञान का जो आज स्वरुप है वह अति विकसित है।

इस "सुपर टेकनोलोजी" से भरे जगत में वह सब कुछ पिछड़ा माना जाता है जो विज्ञान के साधनों उसके तर्कों प्रमाणों तथ्यों पर आधारित नहीं होता। प्रत्यक्षवाद से मनुष्य के इस विकास ने मनुष्य को कई गुना ऊँचा उठाया है। किन्तु इससे न तो शन्ति मिली न सन्तोष भ्रान्तियों, उद्वेग, संक्षोभ, बेचैनियां इस सीमा तक बढ़ते चले गये कि आज सारी मानव जाति दुखी है, रुग्ण है। आज का मानव प्रगति को चरम सीमा पर पहुँच विकासित मानव है तो वह भोगवादी बनता हुआ चिंतन व आचरण से क्यों पशु को भी पीछे छोड़ता नजर आता है, इसका सही उत्तर किसी आधुनिक चिंतक वैज्ञानिक के पास नहीं हैं। इसका उत्तर तो एक ऋषि हजार वर्ष पूर्व दे दिया था व कहा था भोग भी त्याग के साथ करो। अर्थात जियो और जिने दो। यह है चिरपुरातन जो आज की परिस्थितियों के लिए नितान्त सही समाधान जो भारतीय संस्कृति के माध्यम से मानवमात्र को उपलब्ध होगा। उस महाविद्या का उदय विकास, प्रयोग, पोषण एंव विस्तार भारत से हुआ जिसे समस्त संसार द्वारा वरण किया था। भारत की समुन्त परिस्थिति और परिष्कृति मनःस्थिति का श्रेय यहाँ के ऋषियों को दिया जाता है। यह उचित भी है। उज्ज्वल चरित्र, उत्कृष्ट चिंतन और साहसिक पुरुषार्थ का निम्नविध समन्वय जिन व्यक्तियों में होगा, वे स्वयं तो ऊचाँ होंगे ही, अपने साथ-साथ लोक मानव को समस्त वातावरण को ऊँचा उठायेंगे।

आज तो सब कुछ बदला-बदला नजर आता है। पुराना तो कुछ भी पहचाना नहीं जाता। विचार हो या परंमपराएँ अथवा

फिर जीवन शैली विदेशों की नकल ही अपना राष्ट्रीय आदर्श बन चुका है। हिंसा मनोरंजन बन गयी है, क्रूरता उसका अन्तःकरण। भारतीय ज्ञान-विज्ञान को परंमपराएँ इतिहास के पृष्ठों में जा छुपी है। यह विष का लावा कहाँ से फूटा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के 68 वर्ष की अवधि में अपनी सीमित आर्थिक प्रविधिक उपलब्धियाँ के अतिरिक्त हम नैतिक, बौद्धिक सामाजिक रूप से एक-एक करके अपंग क्यों हो गये। सांस्कृतिक विघटन की प्रतिक्रिया चुपचाप चलती रही। हमें उसका अहसास तक न हुआ।

नोबेल पुरस्कार विजेता फ्रान्सीसी वैज्ञानी अलोक्सिस करेल के शब्दों में हम बहुत कुछ खोज चुके और अगले दिनों इससे भी अधिक महत्वपूर्ण प्रकृति गत रहष्यों को खोजने जा रहे हैं, किन्तु अभी भी मनुष्य पहले की भाँति अज्ञान बना हुआ है। सच तो यह है कि वह इस प्रकार खोता चला जा रहा है कि अगले दिनों उसे खोजना कठिन हो जायेगा। मनुष्य को ज्ञान सम्पदा आश्चर्यजनक गति से बढ़ रही है, पर अपने में वह अभी असीम अज्ञान से जकड़ा हुआ है" सभ्यता और सम्पत्ति का विकास हो रहा है, पर मनुष्य का पिछड़ापन बरकरार है। आदमी ने दुनिया को अपने योग्य बनाया पर वह अपने लिए पराया हो गया। इसके अस्तित्व के एक-एक भाग को समग्र शास्त्र का रूप दिया गया है। शरीर शास्त्र, मनशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, जैसे खण्डों की जानकारी हो तो उपयोगी है। पर समग्र मानव को समझे बिना कुछ काम बनेगा नहीं। पाश्चात्य संस्कृति ने मानव को एक आर्थिक प्राणी ही समझा है जबकि हमारी भारतीय संस्कृति मानव को एक चेतनाशील प्राणी की महत्ता प्रदान की है। यही कारण है कि पाश्चात्य देश संसार को एक बाजार के रूप में देखता है और वहीं पर हमारा महान भारत सम्पूर्ण विश्व को वासुदेव कुटुम्बकम की दृष्टि से देखता है। मानवी प्रगति की व्याख्या करते हुए हमें उसके दृष्टिकोण और चरित्र के स्तर का भी मूल्याँकन करना चाहिए क्योंकि अपने संबंध में बढ़ता हुआ अनाड़ीपन ही मनुष्यों को उलझनों में और समाज को कठिन समस्याओं में जकड़ता चला जा रहा है। सृष्टि के आदि काल से अब तक विचार करें तो हम पाते हैं कि आर्य संस्कृति से लेकर अबतक अनेकानेक उन्नत संस्कृतियाँ उन्नति के चरम शिखर पर जा पहुँची थी किन्तु क्या कारण है कि उनका आज नाम भी शेष नहीं है और सब से पुराने होते हुए भी भारतीय संस्कृति अब तक अपना अस्तित्व बनाए हुए है। विधर्मी विदेशी संस्कृतियों के संघर्ष में बहक्षीण दुर्बल अवश्य हुई है। किन्तु इसकी विभिन्नतियाँ, नीव दृढ़ बनी रही। परिष्कार की भावना का अधिक ध्यान देने के कारण उसका अस्तित्व सुरक्षित रहा।

सभ्यता और धर्म के समन्वय का नाम संस्कृति है। जिस तरह इड़ा और पिंगला के योग से सुषुम्ना का गंगा और यमुना के योग से त्रिवेणी का आविर्भाव होता है, उसी प्रकार संस्कृति धार्मिक परिपेक्ष्य में तो अन्तर्मुखी जीवन के विकास की प्रेरणा देती है और सभ्यता के रुप में बाह्य जीवन को भी शुद्ध और निर्मल बनाती है, जिसमें एक मनुष्य किसी भी दूसरे के हित का अतिक्रमण न करता हुआ धार्मिक लक्षण की ओर बढ़ता रहे। अनगढ़ वस्तुओं को सुन्दर एवं उपयोगी बनाना भौतिक संस्कृति है। मानवी चेतना पर चढ़े जन्म जन्मान्तरों के पशु संस्कारों के निवारण का नाम मानवी संस्कृति है।

महान ऋषि मुनियों में विश्वामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि, कश्यप भारद्वाज, कपिल, कपाद, गौतम, याजवल्कय, कात्यान, गामिल, चिपलाढ़, शुकदेव, श्रृंगी, धौम्य आदि जैसे महान महामानवों ने अपने आदर्श चरित्र से विश्वमानव को कितनी सेवा साधना की इसका स्मरण करने मात्र से हमारी छाती गर्व से फूल जाती है।

आदिशंकराचार्य, कुमारिलभह, नानक, गोविन्द सिंह ज्ञानेश्वर, तुकाराम, समर्थ, चैतन्य, सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, दयानन्द, विवेकानन्द आदि की सन्त परम्परा ने युग चेतना का किस प्रकार संचार किया था? जनक जैसे राजा कृषिकार्य से अपना गुजारा करते थे और राजकोष की पाई-पाई प्रजाहित में खर्च करते थे। कर्ण, अशोक, हर्ष, मान्धाता भामाशाह, जैसे उदार दानी अपनी संपदा का सत्य प्रयोजन के लिए समय-समय पर दान करते थे। परशुराम और चाणक्य जैसे ऋषियों ने अतीत से जुझने के लिए योजना बनायी थी। वशिष्ठ से लेकर

वन्दा वैरागी, गुरुगोविन्द सिंह, रामदास, गांधी तक वे मर्म तन्त्र की तरह राजतन्त्र को भी विकृत न होने देने के लिए साहसिक भूमिका निभाई थी।

सम्प्रदाय, मजहब, जाति, वर्ग एवं राष्ट्रीय दीवारों से निकलकर मानवी सिद्धांतो, एंव विश्व-बन्धुत्व को प्रोत्साहन देने वाली यहाँ की ज्ञान सपंदा ने प्रत्येक धर्म एंव मजहब के व्यक्ति को प्रभावित किया है। अतः आत्म विस्मृति को तोड़ने के लिए व्यापत स्तर पर विचार क्रान्ति की मशाल जलानी होगी। आलस्य एवं प्रमाद की जड़ता में डूबी जन-चेतना को उस गर्त से निकालने के लिए व्यापक स्तर पर प्रजा अभियान छोड़ना होगा।

हम सुसंस्कृत बने। संस्कृति को अपनाये। जीवन लक्ष्य की और राजमार्ग में चले। ज्ञान और कर्म की उपासना करें। आन्तरिक स्तर सुधारें।

(वन्दे मातरम्)

ऊँ शान्ति।

संदेश

मैं राह बनाना चाहता हूँ बस,
तू गीत मिलन के गाता चल,
अनेक तरणी, अनेक नाविक
और कितनी विपदाएं।
सबके बीच का किनारा ढूँढता हूँ
पत्थरों की चोट से,
ढीठ को भी तोड़ता हूँ।
हो आतंक पर उस,
आतंकी को खोज लेता हूँ।
विज्ञान जहाज पर बढ़ी कदमों को,
डूबने से भी बचाता हूँ।
सभ्यता के टूटने की जोड़ को,
मैं खत्म करना चाहता हूँ।
जब दिमाग जयी होता है
विश्व का मैदान ज्ञान पर चलता है।
मैं चलता हूँ, चलाता हूँ
सबको आगे ले जाना चाहता हूँ।

ग्रह नक्षत्रों के खेल को
मैं विज्ञान स्पेस से जोड़ता हूँ
हो कहीं, सिलिकॉन वैली
मैं उससे भूमि को आगे ले जाना चाहता हूँ
क्या उनकी सोच देख विस्मित न होना।
मैं बहारों में बहार ढूँढता हूँ।
भारत के संदेश को आगे ले जाना चाहता हूँ।
हम हैं दीपवान आर्य संतान
दिव्य शक्ति, शांति से जोड़ता हूँ।
मैं अकेला चलना बस, चाहता हूँ।

हरीतिमा प्रसाद
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

अगर ब्रह्मपुत्र नहीं होगा तो क्या होगा ?

शहानाबुद्दिन
दसवीं 'ब'
दिल्ली पब्लिक स्कूल, दुलियाजान

ब्रह्मपुत्र नदी हमारे भारत का एक शान है और खास करके हमारे असम का, ब्रह्मपुत्र नदी हमारे असम की खासीयत बढ़ाती है। ब्रह्मपुत्र नदी ने हमें कितने प्राकृतिक वन्य जीवन दिया है और इसने हमारी पूर्वोत्तर भारत की सुंदरता बढ़ाई है और इसके लिए हम गर्व महसूस करते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी ने बहुत सी चीज़े प्रदान की हैं, पर किसी को यह पता है कि अगर ब्रह्मपुत्र नदी नहीं रहेगा तो क्या होगा, क्या होगा जो इस नदी के ऊपर अपने जीवन के लिए निर्भर करते हैं क्या होगा हमारे असम की शान का।

ब्रह्मपुत्र नदी अगर नहीं रहा तो आनेवाला समय में हम बहुत पछताऐंगे, जिन लोगों को इससे पानी, खाने की चीज़ें आदि मिलती है वे लोग मर जायेंगे इसके साथ जो बांध हैं वे सब बेकार हो जाऐंगे इससे पैदा होने वाली ऊर्जा से हम जो बिजली इस्तेमाल करते हैं वह भी रुक जाएगा और ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे रहने वाले लोगों को बहुत मुसीबतों का सामना करना होगा। अगर यह नदी न रहा तो जलीय जीवन का अंत हो जाएगा साथ-साथ हम लोगों को भी कठिनाइयों का सामना करना होगा। ब्रह्मपुत्र को देखने कितने लोग बाहर से आने भी बंद हो जाएगा, इसके अतिरिक्त पर्यटन उद्योग को अपने जीवन को चलाने में कठिनाई होगी। बहुत सी मछवारों को परेशानियों का सामना करना होगा, उनका खर्चा-पानी रुक जाऐगा।

अगर हमें अपनी शान और मान को बचाना है तो हमें इसको खोने से बचाना होगा, हमें अपनी सरकार द्वारा इसकी रखवाली करनी होगी और लोगों को अवगत कराना होगा और हमारे ब्रह्मपुत्र को प्रदूषित होने से बचाना होगा, नहीं तो आनेवाले समय में हम अपनी गर्व और महत्व की इस नदी को खो देंगे, अगर हमें इस पर आगे भी गर्व करते रहना है तो हमें इस अनमोल रतन जैसी हमारी ब्रह्मपुत्र नदी की सुरक्षा करनी होगी।

ऋतुओं की ऋतु वसंत

सुमित्रानंदन पंत की वसंत पर कविता

फिर वसंत की आत्मा आई,
मिटे प्रतीक्षा के दुर्वह क्षण,
अभिवादन करता भू का मन!
दीप्त दिशाओं के वातायन,
प्रीति सांस-सा मलय समीरण,
चंचल नील, नवल भू यौवन,
फिर वसंत की आत्मा आई,
आम्र मौर में गूंथ स्वर्ण कण,
किंशुक को कर ज्वाल वसन तन!
देख चुका मन कितने पतझर,
ग्रीष्म शरद, हिम पावस सुंदर,
ऋतुओं की ऋतु यह कुसुमाकर,
फर वसंत की आत्मा आई,
विरह मिलन के खुले प्रीति व्रण,
स्वप्नों से शोभा प्ररोह मन!
सब युग सब ऋतु थीं आयोजन,
तुम आओगी वे थीं साधन,
तुम्हें भूल कटते ही कब क्षण?
फिर वसंत की आत्मा आई,
देव, हुआ फिर नवल युगागम,
स्वर्ग धरा का सफल समागम।

साभार : पूर्वांचल प्रहरी

वंचित वर्ग की आवाज उठाता शरत-साहित्य

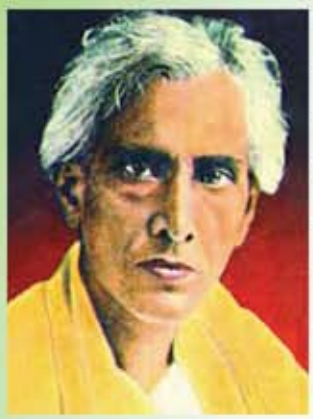

बांग्ला साहित्य के महान रचनाकार शरतचंन्द्र चटोपाध्याय के साहित्य में मुख्य पात्र समाज के उस वंचित वर्ग से जुड़े हुए होते थे, जिन्हें उनके पहले के साहित्य में कभी इतनी प्रमुखता से नहीं उठाया गया था। आमतौर पर हारा हुआ नायक और मजबूत स्त्री पात्र उनकी कहानियों का आधार हुआ करते थे। शरतचंन्द्र चट्टोपाध्याय वैसे तो स्वयं को बंकिमचंन्द्र चटर्जी और रवींद्रनाथ ठाकुर के साहित्य से प्रेरित बताते थे लेकिन उनके साहित्य ने समाज के निचले तबके को पहचान दिलाई और यही नहीं उन्हें उनके इसी दुस्साहस के लिए समाज के रोष का पात्र भी बनना पड़ा। शायद यही वजह रही कि हिंदी साहित्य के रचनाकार विष्णु प्रभाकर ने उन्हें आवारा मसीहा की संज्ञा दी।

दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य करने वाले और हिंदी साहित्य में लेखन के लिए प्रेमचंद कथा सम्मान जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित प्रभात रंजन कहते हैं, शरतचंद्र ने अपनी रचनाओं में समाज के निचले तबके को उभारने का काम किया है, सुंदरता की जगह कुरुपता को अधिक प्रमुखता दी और इसी कारण उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक लगती हैं। उन्होंने बताया, शरतचंद्र ने पथ के दावेदार में अपने म्यांमार प्रवास के अनुभव को बताया जो अंग्रेजों को खटक गई और इसी कारण अंग्रेजों ने इस पुस्तक को प्रतिबंधित कर दिया था। शरतचंद्र की देवदास पर तो 12 से अधिक भाषाओं में फिल्में बन चुकी हैं और सभी सफल रही हैं। उनकी चरित्रहीन पर बना धारावाहिक भी दूरदर्शन पर सफल रहा। चरित्रहीन को जब उन्होंने लिखा था तब उन्हें काफी विरोध का सामना करना पड़ा था क्योंकि उसमें उस समय की मान्यताओं और परंपराओं को चुनौती दी गई थी। विष्णु प्रभाकर लिखते हैं, रवींद्रनाथ ने जिस नवयुग का सूत्रपात किया शरतचंद्र ने उसमें माटी की गंध बसाकर उसे घर-घर तक पहुंचा दिया। बिहार के भागलपुर में ननिहाल में शरत का बचपन बीता। उनका वह समय ज्यादातर अपने मामा सुरेंद्र के साथ शरारत करने में बीता। लेकिन शरारती के कोमल मन में एक दार्शनिक नायक भी जीवित था। साहित्य के क्षेत्र में शरतचंद्र देश के ऐसे साहित्यकार रहे जो देशभर में हर भाषाओं में लोकप्रिय रहे। विष्णु प्रभाकर की आवारा मसीहा को पढ़ने पर शरतचंद्र की लेखन शैली का पता चलता है। फक्कड़ व्यक्तित्व और यायावरी जीवनशौली जहां उनमें व्याप्त आवारगी को दिखाती है तो देवदास जैसी कृति उनमें व्याप्त रूमानियत को भी दर्शाती है। देवदास, चरित्रहीन, बड़ी दीदी, मंझली दीदी, पथ के दावेदार और श्रीकांत जैसी अनगिनत कहानियों और उपन्यासों से उनकी साहित्य की विविधता का तो पता चलता ही है साथ ही इन कहानियों के पात्रों द्वारा वे समाज को चुनौती देते हुए भी दिखते हैं।

साभार दैनिक पूर्वोदय

डिगबोई ऑयल इंडिया में हिंदी सप्ताह आयोजित

डिगबोई। ऑयल इंडिया लिमिटेड के डिगबोई स्थित पूर्वी उत्पादन क्षेत्र द्वारा 21 से 30 नवंबर तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजकों द्वारा स्थानीय स्कूली विद्यार्थियों, ऑयल इंडिया के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के बीच आलेख, पत्र लेखन, निबंध जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से प्रति वर्ष इस प्रकार हर्षोल्लास के साथ ऑयल इंडिया के पूर्वी उत्पादन क्षेत्र, डिगबोई में हिंदी सप्ताह का आयोजन किया जाता है। यहाँ आज पूर्वी उत्पादन क्षेत्र के सभागार में हिंदी सप्ताह का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजन किया गया। ऑयल इंडिया के प्रशासनिक एवं हिंदी अधिकारी चंपक दास के संचालन में संपन्न इस कार्यक्रम में पूर्वी उत्पादन क्षेत्र, डिगबोई के महाप्रबंधक प्रतुल बरुवा, उत्पादन प्रमुख आलोक डिमरी, पूर्वी उत्पादन क्षेत्र के प्रमुख अनंत मेधी, मुख्य अभियंता क्रमशः दिलीप कुमार गोस्वामी और देव श्याम आदि के अलावा यहाँ मुख्य अतिथि के रूप में सीपी गोस्वामी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित अतिथियों एवं अधिकारियों के आसन ग्रहण और अभिनंदन से किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक प्रतुल बरुवा ने हिंदी की उपयोगिता एवं आवश्यकता के संदर्भ में अपना वक्तव्य रखा। इसके अलावा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीपी गोस्वामी ने हिंदी के इतिहास एवं विकास यात्रा से लोगों को अवगत कराते हुए कहा कि हिंदी एक ऐसी सरल और रोचक भाषा है जो लोगों के बीच समन्वय स्थापित करने का काम करती है। इसके जरिए हम भौगोलिक एक-दूसरे से भावों का आदान-प्रदान करते हैं। इसके अलावा कार्यक्रम में उपस्थित ऑयल के अन्य अधिकारियों ने भी हिंदी भाषा के संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत किया। अंत में

डिगबोई : हिंदी सप्ताह के समापन कार्यक्रम के दौरान मंचासीन ऑयल के अधिकारीगण। फोटो : निसं

हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित तमाम प्रतियोगिताओं में निर्णायकों की भूमिका अदा करने वाले दिल्ली पब्लिक स्कूल, डिगबोई के शिक्षक संजय कुमार ओझा, लिटिल स्टार सीनियर सेकेंडरी स्कूल के शिक्षक राकेश तिवारी तथा प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ। (निसं)

कार्यक्रम के कुछ छायाचित्र

राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।

- महात्मा गांधी

राजभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

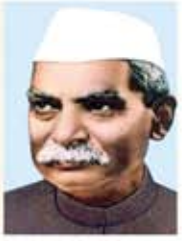

हिन्दी अपने गुणों से देश की राष्ट्रभाषा है।

- लाल बहादुर शास्त्री

हिन्दी अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण
सारे देश की भाषा है।

- नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

पढ़ो, लिखो कोउ लाख विध, भाषा बहुत प्रकार।
पै जबहीं कुछ सोचिहो निज भाषा अनुसार।।

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति की सरलतम स्रोत है।

- सुमित्रानंदन पंत

हिन्दी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति।

- रामवृक्ष बेनीपुरी

CIN : L11101AS1959GOI001148